इकाई-III Date:-29.05.2020

Topic:- भाषा अर्जित करना और भाषा सीखने में अंतर:-

वे केवल इसी तथ्य से अवगत होते हैं कि वे सम्प्रेषण के लिए भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। (इस प्रक्रिया में) हम सामान्यतः भाषा सीखते समय इसके नियमों को सीखने के प्रति सचेत नहीं होते हैं। बावजूद इसके हमारे मन में शुद्धता के प्रति आग्रह होता है। व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध वाक्य हमें सही प्रतीत होते हैं तथा त्रुटियाँ गलत। भाषा अर्जन का मतलब ही है कि भाषा को अप्रत्यक्ष, अनौपचारिक और स्वाभाविक रूप से सीखना।

द्वितीय भाषा में क्षमता बढ़ाने का दूसरा तरीका भाषा अधिगम है। आगे से हम 'अधिगम' शब्द का प्रयोग द्वितीय भाषा के सचेत ज्ञान यानी उसके नियमों को जानना, उनके प्रति सचेत होना, और उनके विषय में बोल पाने के लिए करेंगे। गैर तकनीकी शब्दावली में 'अधिगम' से तात्पर्य भाषा के उस रूप के बारे में जानना है कि ज्यादातर लोगों को व्याकरण या नियमों के रूप में पता होता है। इसके पर्यायवाची रूपों में भाषा का औपचारिक ज्ञान या प्रत्यक्ष रूप से सीखना शामिल है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि भाषा अधिगम अथवा भाषा सीखने की प्रक्रिया में प्रयास शामिल है और उद्देश्य भी। इसमें समाज विशेष की संस्कृति को भी सीखना होता है, क्योंकि शब्दों के अर्थ सामाज-संस्कृति का अविच्छिन्न हिस्सा होता है। लेकिन भाषा अधिगम की प्रक्रिया भाषा अर्जित करने के समान प्राकृतिक रूप से चलती है। यदि द्वितीय भाषा सीखने के लिए प्रथम भाषा की तरह ही भाषा का परिवेश उपलब्ध कराया जाए तो भाषा सीखने में सुविधा होती है। एक भाषा शिक्षक की भूमिका यह है कि वह बच्चों को बोलने, अपनी बात कहने अथवा अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध कराएँ। बच्चों की मातृभाषा को कक्षा में सम्मान दें और लक्ष्य भाषा यानी जो भाषा सीखी जा रही है उसका वातावरण उपलब्ध कराएँ।

END

Scanned with CamScanner